अहिल्याबाई ने 18वीं शताब्दी में विधवा उत्पीड़न और जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियों के खिलाफ कदम उठाए, वे हमें सीख देती हैं

अहिल्याबाई होल्कर : आधुनिक युग में एक प्रेरणा

भारतीय इतिहास की कुछ शख्सियतें ऐसी हैं जिनके आदर्श और कार्य आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने युग में थे। महारानी अहिल्याबाई होल्कर (1725-1795) ऐसी ही एक शख्सियत हैं जिन्हें लोकमाता और न्याय की देवी के रूप में जाना जाता है। 18वीं शताब्दी में मालवा साम्राज्य की शासिका के रूप में उन्होंने न केवल अपने शासन को समृद्ध और सशक्त बनाया, बल्कि समाज सुधार, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में ऐसे कार्य किए, जो आज के भारत के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। 2025 में उनकी 300वीं जयंती के अवसर पर, उनके जीवन को आधुनिक परिप्रेक्ष्य से देखें और समझें कि उनकी शिक्षाएं आज कैसे लागू हो सकती हैं।

प्रारंभिक जीवन : शिक्षा और समावेशिता का सबक : अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उस समय लड़कियों की शिक्षा दुर्लभ थी, लेकिन उनके पिता मानकोजी शिंदे ने उन्हें पढ़ना-लिखना और शास्त्रों का ज्ञान दिया। यह आज के संदर्भ में शिक्षा के महत्व और लैंगिक समानता की दिशा में एक प्रेरक उदाहरण है। आज, जब भारत में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियान चल रहे हैं, अहिल्याबाई का बचपन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो। उनके जीवन की एक कहानी, जिसमें मल्हारराव होल्कर ने उनकी भक्ति और बुद्धिमत्ता देखकर उन्हें अपने पुत्र खंडेराव की दुल्हन चुना, यह दर्शाती है कि प्रतिभा और चरित्र किसी की सामाजिक स्थिति से बड़े होते हैं। आज के स्टार्टअप और टेक्नोलॉजी युग में, जहां प्रतिभा को पहचान मिल रही है, अहिल्याबाई की कहानी हमें सिखाती है कि अवसर देने से समाज में बदलाव आ सकता है।

व्यक्तिगत दुख और नेतृत्व : संकट में दृढ़ता : अहिल्याबाई का जीवन व्यक्तिगत त्रासदियों से भरा था। उनके पति खंडेराव की 1754 में, ससुर मल्हारराव की 1766 में, और पुत्र मालेराव की 1767 में मृत्यु ने उन्हें गहरे दुख में डुबोया। फिर भी उन्होंने इन दुखों को अपनी ताकत बनाया। 1767 में, जब मालवा साम्राज्य में उत्तराधिकारी का संकट था, और कई सामंतों ने एक महिला के शासन का विरोध किया, तब अहिल्याबाई ने अपनी प्रशासनिक और सैन्य कुशलता से सबको चुप कर दिया। आज के समय में, जब लोग व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों से जूझ रहे हैं, चाहे वह नौकरी का दबाव हो, आर्थिक संकट हो, या सामाजिक असमानताएं, अहिल्या बाई की यह दृढ़ता हमें सिखाती है कि विपत्तियों में भी नेतृत्व और हिम्मत के साथ आगे बढ़ा जा सकता है। उनकी कहानी उन महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो कॉरपोरेट बोर्डरूम से लेकर ग्रामीण पंचायतों तक नेतृत्व कर रही हैं।

शासन और प्रशासन : सुशासन का मॉडल : अहिल्याबाई का 30 वर्षों का शासनकाल (1767-1795) सुशासन का एक आदर्श उदाहरण है। उनकी प्रजा केंद्रित नीतियां, जैसे प्रतिदिन जन-सुनवाई करना और गरीब से गरीब व्यक्ति की शिकायत सुनना, आज के लोकतंत्र के लिए एक सबक हैं। उनकी निष्पक्षता और पारदर्शिता ने उन्हें न्याय की देवी बनाया। आज जब भ्रष्टाचार और नौकरशाही की शिकायतें आम हैं, अहिल्याबाई का शासन हमें याद दिलाता है कि नेतृत्व में ईमानदारी और जवाबदेही कितनी महत्वपूर्ण है। उन्होंने व्यापार और उद्योग को बढ़ावा दिया, विशेष रूप से महेश्वर में हथकरघा उद्योग की स्थापना की, जो आज भी महेश्वरी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। यह आज के मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत के विचारों से मेल खाता है। उनकी सिंचाई परियोजनाएं, जैसे कुएं और तालाब, आज के जल संरक्षण और स्मार्ट खेती के प्रयासों से जुड़ती हैं। उनकी आर्थिक नीतियां हमें सिखाती हैं कि स्थानीय संसाधनों का उपयोग और टिकाऊ विकास ही समृद्धि का आधार है।

समाज सुधार : समावेशी समाज की नींव : अहिल्याबाई ने 18वीं शताब्दी में विधवा उत्पीड़न और जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियों के खिलाफ कदम उठाए। उन्होंने विधवाओं को सम्मानजनक जीवन दिया और महिलाओं को शिक्षा व प्रशासन में शामिल किया। यह आज के भारत में लैंगिक समानता और सामाजिक समावेश के लिए चल रहे प्रयासों, जैसे महिला आरक्षण बिल या सामाजिक न्याय के लिए नीतियों, से जुड़ता है। उनकी यह सोच कि समाज का हर वर्ग सम्मान और अवसर का हकदार है, आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

धार्मिक योगदान : संस्कृति और पर्यावरण का संरक्षण : अहिल्याबाई की भक्ति और धार्मिक कार्य आज के लिए भी प्रेरक हैं। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया, सोमनाथ, अयोध्या और अन्य तीर्थस्थानों पर मंदिर और धर्मशालाएं बनवाईं। यह भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के संरक्षण का प्रतीक था। आज, जब भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को मजबूत कर रहा है, अहिल्याबाई के कार्य हमें याद दिलाते हैं कि आस्था और संस्कृति समाज को जोड़ने का काम करती हैं। उन्होंने नर्मदा नदी के तट पर घाट और कुएं बनवाए, जो पर्यावरण संरक्षण और तीर्थयात्रा को आसान बनाने का प्रतीक थे। आज के समय में, जब नदियों का पुनर्जनन और पर्यावरण संरक्षण बड़े मुद्दे हैं, उनके कार्य हमें प्रेरित करते हैं कि धार्मिक और सामाजिक कार्य पर्यावरण के साथ संतुलन में हो सकते हैं **इंदौर और महेश्वर : स्टार्टअप और सांस्कृतिक केंद्र :** अहिल्याबाई ने इंदौर और महेश्वर को आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र बनाया। आज इंदौर भारत के सबसे स्वच्छ और तेजी से विकसित हो रहे शहरों में से एक है, और महेश्वर अपनी साड़ियों और पर्यटन के लिए जाना जाता है। **विरासत और आधुनिक प्रासंगिकता :** 13 अगस्त 1795 को अहिल्याबाई का निधन हुआ, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। जवाहरलाल नेहरू ने उनकी प्रशंसा में लिखा कि उनका शासनकाल समृद्धि और सुशासन का प्रतीक था। आज, जब भारत डिजिटल क्रांति, लैंगिक समानता और सांस्कृतिक पुनर्जनन की दिशा में बढ़ रहा है, अहिल्याबाई के आदर्श हमें रास्ता दिखाते हैं।

देवी अहिल्या ने महेश्वर को चुना राजधानी

महारानी देवी अहिल्या बाई होलकर 1735 में खंडेराव से विवाहित होलकर इंदौर आ गई थी, होलकर रियासत के प्रमुख मल्हारराव होलकर अहिल्या बाई के ससुर थे। अहिल्या बाई ने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे थे। इंदौर में आने के बाद 1754 में पति, 1766 में ससुर, पुत्र और सास का निधन हो गया था। इतने संकट एक नगर में रहकर झेलने के कारण अहिल्या बाई का इंदौर से मोहभंग हो गया था। उन्होंने एकांत में जाकर रहने का विचार किया। मन की शांति के लिए अहिल्या बाई ने हिमालय के किसी स्थान पर जाकर रहने का भी विचार किया था, पर स्वभाव और कर्म से अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति वी होने की वजह से अहिल्या बाई ने आसपास में ही किसी धार्मिक स्थान को ही अपनी राजधानी बनाने का विचार किया। इसमें महेश्वर उन्हें पौराणिक और ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे श्रेष्ठ लगा, इसलिए उसे चुन लिया।

» राजधानी के लिए इन स्थानों को देखा

देवी अहिल्या बाई नर्मदा नदी को अत्यधिक महत्व के साथ पवित्र मानती थीं। नर्मदा के किनारे के स्थानों पर राजधानी के लिए स्थान की खोज आरंभ हुई। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित मर्दाना, जो निमाड़ में था, वह स्थान अहिल्या बाई को उचित लगा पर ज्योतिषों ने इस स्थान को उचित नहीं माना। महेश्वर को सभी मानकों पर उचित मानकर 1766 में राजधानी बनाने का निर्णय लिया गया था।

» महेश्वर का यह है महत्व

मध्य प्रदेश के मालवा में उज्जैन और महेश्वर की प्राचीन नगरों में गिनती होती है। प्राचीन ग्रंथो में अवंतिका (उज्जैन) और महिष्मति (महेश्वर) का उल्लेख मिलता है। मान्यताओं के अनुसार राजा महिष्मान ने महेश्वर को बसाया था। राजा सहस्त्रार्जुन के अनुपदेश की राजधानी महेश्वर रही है। आदि संकराचार्य और मंडन मिश्र का शास्त्रार्थ नर्मदा के किनारे इस क्षेत्र में हुआ था। हैहयवंशी राजाओं ने यहां राज किया, चालुक्यों के राज्य का यह प्रसिद्ध नगर था। मांडव के सुलतानों ने इस नगर पर विजय प्राप्त कर ली थी। 1422 में अहमदशाह ने हुशंगशाह से यह छीन लिया था। अकबर के कार्यकाल में महेश्वर का महत्व था।

» ससुर मल्हारराव ने मुगलों से छिना था महेश्वर

1730 में श्रीमंत मल्हारराव होलकर ने महेश्वर को मुगलों से छीनकर अपने अधिकार में ले लिया था। 1745 में मल्हारराव होलकर ने महेश्वर में विशेष सुविधाएं देने के साथ मठनों के निर्माण का आदेश दिया था। महेश्वर को लेकर एक मान्यता यह भी है कि रावण सहस्त्रबाहु की राजधानी महेश्वर में आया था। उसने अपना पराक्रम दिखाने के लिए उसने अपनी भुजाओं से नर्मदा का जल प्रवाह रोकने की कोशिश की थी, पर जल उसकी भुजाओं से निकल गया था, इसलिए महेश्वर में कुछ दूरी पर नर्मदा की सहस्त्रधारा स्थान है।

» महेश्वर के विकास पर ध्यान दिया

देवी अहिल्या बाई ने 1766 में महेश्वर को होलकर राज्य की राजधानी बना दिया था। राजधानी बनने से महेश्वर के विकास के द्वार खुल गए थे। राजधानी बनने के बाद महेश्वर का समुचित विकास हुआ। देवी अहिल्या बाई ने नर्मदा किनारे सुंदर घाट और कई मंदिरों का निर्माण और पुराने मंदिरों वक जीर्णोद्धार करवाया था। मंदिर के निर्माण के लिए महेश्वर में देश भर से कई शिल्पियों, कारीगरों को महेश्वर में बसाया। स्थानीय लोगों को कार्य के लिए निमाड़ में कपास की अधिकता को देखते हुए महेश्वर में रहस उद्योग आरंभ करवाया जो आज देश भर में महेश्वरी साड़ी के नाम से पहचाना जाता है।

» विद्वानों को महेश्वर में बसाया

पुना और महेश्वर वक वरीबी रिश्ता था, इसलिए महेश्वर राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थेंद्र था। राज्य में कई वयनूनविद् आकर बस गए थे। कई धार्मिक विद्वानों वो नगर में बसाया गया था। अहिल्या बाई ने संपूर्ण देश के विद्वानों को महेश्वर में नर्मदा तट पर संरक्षण दिया। इनमें प्रमुख मल्हार भट्ट मुल्ये, जानोबा पुराणिक, रामचंद्र रनाडे, काशीनाथ शास्त्री, दामोदर शास्त्री, निहिल भट्ट, मेवा शास्त्री, मनोहर बर्वे, गणेश भट्ट, त्रिंबकक भट्ट, महंत सुज्ञान गिरि, गोस्वामी हरिदास, आनंद राम प्रमुख थे। महेश्वर के सुंदर मवन, मंदिर और नर्मदा घाट वास्तुवरत के सुंदर उदाहरण हैं। यहां वक रमणीय मौहोल और महेश्वर वी छठा निराली है। अहिल्या बाई के कार्यकाल में निर्मित राजमवन, गादी और कई स्थल आज भी महेश्वर में मौजूद हैं।

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

उन्हें अपनी सामर्थ्य पर इतना घमंड जैसे यही चला रहे हों सकल ब्रह्मांड

जीवन समाधान

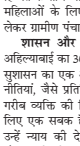

महाराज् वैभव भटेले
(एम्. अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

शास्त्रकार तो यही कहते हैं कि मनुष्य के विनाश का सबसे बड़ा कारण अहंकार ही है। फिर चाहे वह शक्ति का हो भक्ति का हो धन का हो या ज्ञान का। अहंकार तो अहंकार है जिसका काम ही विनाश की ओर ले जाना है। इसीलिए तो शास्त्र और सत्पुरुष हमें हमेशा से ही अहंकार विमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते रहे हैं। लेकिन भौतिकवादी और आधुनिकता की इस चकाचौंध में बहुतायत लोगों को न शास्त्र की बात समझ आती और न ही संत सदगुरुओं की बात ही सुनाई देती। बस, वे तो अपनी शक्ति और सामर्थ्य में ही मशगूल रहते हैं स्वयं को श्रेष्ठ और दूसरों को तुच्छ समझते हैं। उन्हें अपनी सामर्थ्य पर इतना घमंड, जैसे यही चला रहे हों सकल ब्रह्मांड! जीवन में उपलब्धियां आएं और उनका लोगों को अहंकार ना हो ऐसा असंभव तो नहीं लेकिन संभव होना भी बहुत दुर्लभ है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने शायद यही सब सोच समझकर लिखा - नहि कोउ अस जन्मा जग माही। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं।। किसी के जीवन में जब धन संपदा आती है सत्ताधिकार मिल जाता है या ज्ञान प्राप्त हो जाता है तब उसके लिए सबसे बड़ा खतरा अहंकार से ही होता है। और आश्चर्यजनक तो यह है कि धन संपदा और सत्ताधिकार से कहीं ज्यादा मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति में अहंकारी हो जाता है। तभी तो शास्त्रकारों ने भगवान की प्राप्ति के लिए ज्ञानमार्ग से कहीं ज्यादा भक्तिमार्ग को प्रबल बताया है क्योंकि भक्ति से मनुष्य में दीनता आती है। बिना दीनता के भक्ति संभव नहीं होती जबकि ज्ञान की प्राप्ति में अहंकार प्रबल होता है। जिससे बचना बहुत कठिन है। कुल मिलाकर सामर्थ्यवान बनने पर अहंकार से विमुक्त रहना बड़ा ही दुष्कर है। आदमी को अपने सामर्थ्यवान होने का इतना ज्यादा घमंड होता है जैसे कहीं परिवार समाज और राष्ट्र ही नहीं बल्कि समूचे ब्रह्मांड को यही श्रीमान संचालित कर रहे हों। बस, इसी का नाम रावण वृति है। जो संपन्न है शक्तिशाली है और ज्ञानवान है फिर भी रावण का अहंकार विवश्यात है। रावण एक तरह से अहंकार का ही विग्रह है। लेकिन यह भी सत्य है कि रावण के विनाश का कारण भी उसका अपना अहंकार ही है। जिसके वशीभूत हुआ रावण प्रभु श्रीराम को भी कुछ नहीं समझता। उन्हें अपना शत्रु मान बैठा और अपने साथ अपने कुल का भी विनाश करवा बैठा।

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं। दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

गर्मी की दस्तक -कल के लिए आज का संकल्प

आज से नौतपे शुरू होंगे, गर्मी और अधिक बढ़ जाएगी और फिर बरसात की हल्की-फुल्की बूंदाबांदी से आपको जो सुकून मिलेगा। उस वजह से आप इन सब बातों को भूल जाएंगे। मैं जानता हूँ आप सोच रहे है की आखिर मैं क्या कहना चाहता हूँ। मेरा आपसे यही निवेदन है कि, इस बार की गर्मी को आप और मैं हम सब याद रखे और भविष्य में ऐसी गर्मी न हो या कम हो इस हेतु प्रयास करे।

मई का महीना चल रहा है आप जिस भी क्षेत्र में रह रहे है एक चीज़ अपने महसूस तो ज़रूर की होगी गर्मी. अब आप सोचेंगे भला गर्मी में गर्मी महसूस नहीं करेंगे तो क्या करेंगे ? लेकिन, जरा रुकिए और सोचिए क्या यह गर्मी पहले जैसे है ? मतलब इस बार की गर्मी में आपको एक अलग सी चिपचिपाहट, शरीर में एक अलग सी बैचेनी और बदन में एक अलग सी थकान महसूस हुई होगी। अगर यह सब आपको भी महसूस हुआ है तो यह लेख आप ही के लिए है। दरअसल गर्मी हर साल होती है लेकिन तापमान का यू अचानक बढ़ाना एक खतरे की घंटी है जिसे सब कुलर,ए ट के माध्यम से नज़र अंदाज़ करते जा रहे है। आज से नौतपे शुरू होंगे, गर्मी और अधिक बढ़ जाएगी और फिर बरसात की हल्की-फुल्की बूंदाबांदी से आपको जो सुकून मिलेगा। उस वजह से आप इन सब बातो को भूल जाएंगे। मैं जानता हूँ आप सोच रहे है की आखिर मैं क्या कहना चाहता हूँ। मेरा आपसे यही निवेदन है कि, इस बार की गर्मी को आप और मैं हम सब याद रखे और भविष्य में ऐसी गर्मी न हो या कम हो इस हेतु प्रयास करे। लेकिन, इसके पीछे आखिर मुख्य कारण क्या है चलिए थोड़ी बात इस पर भी कर लेते है। शहरीकरण के नाम पर जो हमें अच्छी बिल्डिंग, सड़के, माल मिले है इसी का परिणाम ये मौसम परिवर्तन है। यह हम सब की ही मांग है

की हमें अच्छे घर, सड़के माल अदि चाहिए। जो एक प्रकार से बाजार की मांग है और सरकार और अन्य निजी उद्योग इस मांग को पूरा करने में लग जाते है और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। मेरी चिंता सिर्फ इस बात को लेकर है कि, क्या हम इस प्रकार का विकास चाहते है, जो हमारे लिए तो है लेकिन हमारी आने वाली पीढ़ियों को लिए नहीं ? क्या हम इस विकास के नाम पर हुए संसाधनों के नुक्सान की भरपाई कर पाएंगे? क्या हमारे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित है। एक पिता का फ़र्ज़ है कि वह अपनी आने वाली संतान के भविष्य की चिंता करे और उसे सुरक्षित भी रखे दुनिया में लग-भग 43 वर्षों से इस पर चर्चा हो रही है पहले तो लोग क्लाइमेट चेंज, ग्लोबल वार्मिंग मानते ही नहीं थे। आप भी इस लेख को इसलिए पढ़ रहे है क्युकि यह सब आप महसूस कर पा रहे है। 1992 का पृथ्वी सम्मलेन हो या 1997 का क्योटो प्रोटोकॉल या 2015 का पेरिस अग्रीमेंट हर बार हम इन मुद्दों पर बात करते है लेकिन, निजी रूप से इसकी रोकथाम के लिए कुछ नहीं कर पाते। प्रश्न यह है की आखिर हम कर भी क्या सकते है? मेरा जवाब है बहुत कुछ जैसे बारिश के समय आप रेन वाटर हार्वेस्टिंग कर सकते है, नीम, बाबुल, पीपल के पेड़ लगा सकते है। ऑफिस हेतु पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल कम से कम सफ्ता में 2 बार कर सकते है। पेट्रोल की बजाये हृद्वल, या श्वङ्क व्हीकल्स का इस्तेमाल शुरू कर सकते है। यह सब ऐसी चीज़े जो सभी कर सकते है लेकिन प्रश्न यह है की शुरुआत कौन करेगा ? हमें आज खुद से वादा करना होगा कि मैं ज़िम्मेदारी लेता हूँ इसकी शुरुआत मे करूँगा। क्युंकि, यह शुरुआत मेरे या आपके लिए नहीं हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए होगी। परिणाम चाहे जो हो अच्छा या बुरा लेकिन भविष्य में जब आपका बेटा या बेटी आपसे पूछेंगे की इतनी समस्या में अपने क्या किया तब आप उनकी आँखों में आंखे डाल कर गर्व के साथ कह सकेंगे की मेने अपनी पूरी कोशिश की। यकीन मानिए, मिलकर किये गए काम के परिणाम मिलते ही है। एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते हम इतना तो हमारे राज्य,व देश के लिए कर ही सकते है।

-लोकेश भारतीय

वर्ग पहेली 2512

ANKITA VANKANAKAR MOB 09822568332

बायें से दायें:- 1) न ऊँचा न नीचा, 3) पावती, 6) संकट, 6) मांसल, 8) सीढ़ीदार तट, 9) गले लगना, 11) स्मारक, 13) गौणकोटीय, 15) रसेवार भाजी, 17) खरबा, 18) छाती, 19) वारदात, 21) चुप्पी, 22) मौन, 23) प्रसव, 26) योग्य, 28) स्थानांतरण, 29) झक्की.

ऊपर से नीचे:- 1) सुभीता, 2) टकराना, 3) अभिलाषा, 4) तड़कना, 5) कगार; किनारा, 7) कांति-कारक परिवर्तन, 10) बूंद - बूंद करके गिराना, 12) जमीन में धँसाना, 14) उत्साही, 16) पायती, 19) गोलमाल; घोटाला, 20) व्यर्थ, 21) उड़न घू, 24) थमेली, 25) मुँदा; हड़-ताल, 27) कोई और नहीं.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

स	रि	आ	स	उ	प	ज		कि
	न	ल	का	ल		ह	डी	ला
दे	डा	न	ल	ता		ना		ना
ह	त	म	त	भा	ग	द	नी	
सा	ह	स	म	त	स		आ	ला
प	ड	ज	ह	रा		न	भी	
अ	ट	प	टा		पा	ल	न	
उ		ह	व	न	सी	ति		टी
ध	क	रा	ल	स	ल		र	क

राशिफल

दैनिक सच एक्सप्रेस पंचांग

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

सोमवार 26 मई 2025

सूर्योदय- प्रातः 5:33 बजे
सूर्यास्त- शाम 6:49 बजे
चंद्रोदय- 4:37
चंद्रास्त - 6:31
शक संवत् - 1947 विश्वावसु
विक्रम संवत - 2082 कालयुक्त
पूर्णिमांत महीना- ज्येष्ठ
पक्ष - कृष्ण
तिथि - चतुर्दशी दिन 1:18 तक पश्चात् अमावस्या
नक्षत्र - भरणी प्रातः 7:32 तक पश्चात् कृत्तिका
योग - शोभन सुबह 7:05 तक पश्चात् अतिगण्ड
करण - शकुनि दिन 12:16 तक पश्चात् चतुष्पद
सूर्य राशि - वृष
चंद्र राशि - दिन 1:08 तक मेष में

शुभांक 3-9-8

मेष

दिन सामान्य। कोई नया कार्य प्रारंभ ना करें। निर्णय भी आज लेने से बचें। धन खर्च और वाणी पर नियंत्रण आवश्यक। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग - लाल।

वृष

मान सम्मान वृद्धि योग। परिवार में शुभ मांगलिक कार्य की रूपरेखा आज बन सकती है। शिवजी को अक्षत और अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग - सफेद।

मिथुन

सुसुप्त पड़ा से सहयोग प्राप्त हो सकता है। कार्य क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। शिवजी को ही दूर्वा अर्पित करें। शुभ अंक - 3, शुभ रंग- हरा।

कर्क

भाग्यवश अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। रुके हुए कार्य उचित प्रयास करने पर संभव। शिवजी को मिश्री और अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- सफेद

सिंह

दिन सामान्य। आज यात्रा टाले। बड़े बुजुर्गों का सम्मान विशेष लाभकारी। विशेष कर मां के प्रति अवश्य अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वाह करें। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक-9, शुभ रंग- मेहरून।

कन्या

विवाह योग्य जातकों के लिए आज का दिन शुभ। उचित रिश्ते प्राप्त हो सकते हैं बड़ों से सलाह कर निर्णय लेंते। शिवजी को बेल पत्र अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- सफेद।

तुला

दिन कमजोर। कार्य की अधिकता संभव, जिससे मन विचलित हो सकता है। शिवजी को सफेद चंदन अर्पित करें। शुभ अंक- 4, शुभ रंग- सफेद।

वृश्चिक

संतान क्षेत्रीय तरफकी संभव। विवाह योग्य जातकों को अच्छे रिश्ते प्राप्त हो सकते हैं। शिवजी को लाल फल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग- लाल।

धनु

कार्य क्षेत्र में अच्छे अवसर। साथ ही पुराने लंबित मामलों में उत्तम समाधान प्राप्ति संभव। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- पीला।

मकर

कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। भाई बहनों से सहयोग प्राप्ति संभव। परिवार में अच्छा समंजस्य। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग- भूरा।

कुंभ

परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संभव। यात्रा के योग। रूपा धन प्राप्त हो सकता है। शिवजी को वकाला तिल अर्पित करें। शुभ रंग-7, शुभ रंग- नीला।

मीन

दिन उत्तम। मनचाहे कार्य में सफलता प्राप्ति योग। पुराने निवेश से आज लाभ प्राप्त हो सकता है। नया निवेश भी कर सकते हैं। शिवजी को फल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- पीला।

ग्रह स्थिति

सूर्य - मेष राशि में, 14 तारीख 3:55 के पूर्व राशि में। चन्द्रमा - वृषभ राशि, शुक्र - मेष राशि में, बुध - वृषभ में, 29 के बाद मेष में, 30 के बाद मेष में। गुरु - मिथुन राशि में। शनि - कुंभ में, 29 के बाद मेष में। राहु - मीन राशि में। केतु - 30 तारीख 4:24 के पूर्व कन्या राशि में। मंगल - मीन में, 30 के दिन 11:21 के बाद मेष में।

दिशा शूल

पूर्व दिशा में यात्रा वर्जित है। अत्यावश्यक होने पर दूध का सेवन कर यात्रा निकलें।

चौघड़िया

अमृत प्रातः 6:00-7:30 तक
शुभ सुबह 9:00-10:30 तक
रोग दिन 1:30-3:00 तक
लाभ दोपहर 3:00-4:30 तक
अमृत अमावाद 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11:45 से दिन 12:12 तक।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 2 को शाम 6:20 से रात्रि अंत तक। ता.4 को सूर्योदय से शाम 5:47 तक। ता. 14 को सूर्योदय से सुबह 10:40 तक। ता. 18 को सूर्योदय से दिन 3:41 तक। ता. 19 को सूर्योदय से दिन 3:57 तक। ता. 23 को दिन 12:23 से रात्रि अंत तक। ता. 25 को सूर्योदय से दिन 9:12 से तक। ता. 27 को सूर्योदय से प्रातः 5:55 तक। ता. 28 को सूर्योदय से रात्रि 3:13 तक। ता. 29 को रात्रि 2:17 से ता. 30 को रात्रि 1:42 तक।

शिवयोग योग - ता.3 को दिन 1:20 से शाम 5:50 तक।

अक्षय तिथि योग- ता. 14 को सूर्योदय से दिन 10:40 तक, ता. 23 को दिन 12:23 से रात्रि अंत तक।

रवि योग

रविवार: ता.1 को प्रातः 5:44 से दिन 2:25 तक। ता. 2 के दिन 1:08 से ता. 3 को सुबह 5:43 तक। ता. 5 के दिन 2:05 से ता. 6 के प्रातः 5:40 तक। ता. 6 को सुबह 5:14 से ता. 7 को प्रातः 5:36 से शाम 6:21 तक। ता. 9 को रात्रि 12:09 से ता.10 को सुबह 5:41 तक। ता. 12 को प्रातः 5:34 से शाम 6:07 तक। ता.18 को शाम 6:52 से ता. 19 को प्रातः 5:32 तक। ता. 29 को रात्रि 10:42 से ता. 30 को प्रातः 5:28 तक।

पुष्य नक्षत्र: ता. 3 को शाम 5:50 से ता. 4 के शाम 5:47 तक।